P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आर्थिक अवस्थापना तत्वों का औद्योगिक वितरण प्रतिरूप : गाजीपुर (उत्तर प्रदेश) जनपद का एक प्रतीक अध्ययन

सुनील कुमार प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय
पीपीगंज, गोरखपुर (उ.प्र.)
भारत

अशोक कुमार चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
श्रीमती काली देवी
महाविद्यालय भगनें भगवानपुरी
वाया बरही, चौरी चौरा,
गोरखपुर (उ.प्र.) भारत

सारांश

आर्थिक अवस्थापनात्मक तत्वों का विकासखण्डवार विश्लेषण किया गया है। आर्थिक अवस्थापना तत्व ग्रामीण क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास में संरचनात्मक परिवर्तन लाते हैं। इसीलिए अवस्थापना तत्वों को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की नींव कहा गया है जो प्रत्यक्ष रूप में उत्पादन नहीं करते हैं। बल्कि उत्पादन हेतु साधन प्रस्तुत करते हैं। अध्ययन क्षेत्र कृषि पशुपालन और सम्बन्धित गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसीलिए क्षेत्र में कृषि अर्थतन्त्र को विकसित करने वाले अवस्थापना तत्वों पर अधिक बल दिया गया है। प्रमुख अवस्थापना तत्वों में बैंक, सरकारी समितियाँ, कृषि गोदाम, बीज गोदाम, कीटनाशक केन्द्र, उर्वरक केन्द्र आदि का चयन किया गया है। पुनः विकासखण्ड वार इनके निरपेक्ष मूल्यों को जनसंख्या अथवा क्षेत्रफल के अनुसार सापेक्षिक मूल्य में बदला गया है। इसके साथ–साथ इनके सापेक्षिक मूल्यों को जेड मूल्यों में परिवर्तित करके इनके वितरण को स्पष्ट किया गया है। वितरण प्रतिरूप से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न अवस्थापना तत्वों का सर्वाधिक विकास गाजीपुर विकास खण्ड के उत्तरी भागों में अधिक हुआ है। यह समतल भू–भाग सघन जनसंख्या, रेल और सड़क मार्ग जाल से युक्त है। इसलिए यहां विभिन्न प्रकार के आर्थिक अवस्थापना तत्वों का तेजी से विकास हुआ है। गंगा नदी के दक्षिणी भाग में एक मात्र विकासखण्ड जमानिया है, जो पटना मुगलसराय रेलवे मार्ग पर स्थित है यहां भी अवस्थापना तत्व अधिक विकसित है। जबकि गंगा और कर्मनाशा दोआब तथा दक्षिणी–पश्चिमी भाग में सादात, सैदपुर विकास खण्डों में अवस्थापना तत्वों का अपेक्षाकृत कम विकास हुआ है।

मुख्य शब्द :अवस्थापनात्मक तत्व, गुणात्मक, मात्रात्मक, अवस्थिति, वितरण, सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन।

प्रस्तावना

भौगोलिक दृष्टिकोण से अवस्थपनात्मक तत्व ऐसे भौतिक तत्व होते हैं जो किसी क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास की प्रकिया को संचालित करते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि सामाजिक आर्थिक रूपान्तरण के क्षेत्रीय वाहक तन्त्र ही अवस्थापनात्मक श्रेणी में सम्मिलित किये जाते हैं। श्रीवास्तव, शर्मा एवं चौहान[1] (2005) के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र का सामाजिक–आर्थिक विकास उस क्षेत्र के संरचनात्मक परिवर्तन से घटित होता है। संरचनात्मक परिवर्तन में विभिन्न तत्वों की स्थिति एवं संख्या में मात्रात्मक एवं गुणात्मक वृद्धि ही सामाजिक–आर्थिक रूपान्तरण को प्रभावित करती है। ग्रामीण विकास में अवस्थापनात्मक तत्वों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए मानव अपने सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के लिए इन तत्वों का निर्माण करता है।

अवस्थापनात्मक तत्वों की अवस्थिति, वितरण, विशेषताएं एवं परिणाम क्षेत्र विशेष की अर्थव्यवस्था को विकास के मार्ग पर लाते है।[2] इस तरह ग्रामीण विकास में विभिन्न प्रकार की भौतिक–आर्थिक एवं सामाजिक सुविधायें और क्षेत्र विशेष के सन्दर्भ में उनकी सापेक्षिक स्थिति का निर्धारण अवस्थापना तत्व के अन्तर्गत आते हैं। जिसमें विकसित, विकासशील और अविकसित क्षेत्रों के सन्दर्भ में अवस्थापना तत्वों के संख्यात्मक और गुणात्मक रूपान्तरण में अन्तर पाया जाता है। क्योंकि क्षेत्र विशेष की स्थिति के अनुसार ही विभिन्न अवस्थापना तत्वों की भौगोलिक स्थिति का गुणात्मक एवं मात्रात्मक निर्धारण किया जाता है।

अवस्थापनात्मक तत्व किसी क्षेत्र विशेष के सम्पूर्ण अर्थ तन्त्र को विकसित करने में अप्रत्यक्ष योगदान देते हैं। इन अवस्थापनात्मक तत्वों की भौगोलिक स्थिति क्षेत्रीय प्रतिरूप और परिमाण सम्पूर्ण विकास प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। विभिन्न भौगोलिक कारक जैसे–भौतिक, आर्थिक राजनीतिक,

सामाजिक और सांस्कृतिक अवस्थापनात्मक तत्वों की स्थिति विकास और वितरण को प्रभावित करते हैं।[3] ग्रीन वाल्ड (1973) ने अवस्थापना तत्वों को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की नीचे कहा है। जिस पर आर्थिक उत्पादन एवं उत्पादित पदार्थ का संचालन आदि निर्भर है।

मानव संसाधन के अन्तर्गत मानव जनसंख्या की कुशलता एवं उसके जीवन की गुणवत्ता आदि तत्व परोक्ष रूप से सम्पूर्ण विकास प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।[4]

तोमर (1979)[5] के मतानुसार ग्रामीण विकास में सहायक अवस्थापनात्मक तत्व शक्ति संसाधनों की सुविधा, स्वास्थ्य सुविधायें, तकनिकी आदि तत्वों से भी सम्बन्धित हैं क्योंकि इसका योगदान परोक्ष रूप से विकास प्रक्रिया में सहायक होता है।

आर0 डब्लू0 ब्रुकफील्ड (1976) के अनुसार अवस्थापनात्मक तत्व स्वयं प्रत्यक्ष रूप में उत्पादन नहीं करते हैं,किन्तु किसी भी प्रकार के उत्पादन हेतु साधन प्रस्तुत करते हैं।

भौगोलिक दृष्टिकोण से सम्पूर्ण धरातल पर निवास करने वाले विभिन्न मानव समुदायों में इन आधारभूत आवश्यकताओं के क्रम में समानता पायी जाती है। प्रायः प्राणी मात्र की (मानव) तीन आधारभूत आवश्यकता भोजन, वस्त्र हैं, क्योंकि यही आवश्यकता मनुष्य को दूसरे प्राणियों से अलग करती है। इन दोनो आवश्यकताओं के बाद मनुष्य की ऐसी आधारभूत आवश्यकता मकान है, जो मनुष्य द्वारा प्रकृति के सांस्कृतिकरण का प्रथम सोपान माना जाता है। वैसे मकान या आश्रय स्थान प्राणि मात्र की आवश्यकता है।

अवस्थापनात्मक तत्व के रूप में पूँजी, परिवहन एवं संचार के साधन प्राविधिक परिवर्तन, ऊर्जा, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन के साधन, विपणन केन्द्र, आदि क्षेत्र के संभावित विकास में महत्पूर्ण भूमिका निभाते है। इस प्रकार कृषि प्रधान क्षेत्रों में सिंचाई, उर्वरक, बीज, पूँजी तथा विपणन से सम्बन्धित अवस्थापनात्मक तत्वों को मनुष्य स्वयं विकसित करता है इसलिए छोटे से लेकर विशालकाय जीव अपने आश्रय स्थल का निर्माण करते हैं। इन सब में मनुष्य अपने उद्भव काल से लेकर अब तक विविध प्रकार के आश्रय स्थल विकसित करता आ रहा है। इसी क्रम में विकसित आश्रय स्थलों अथवा मकानों के सामूहीकरण से अधिवासों का विकास हुआ है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि अवस्थापनात्मक तत्व भौगोलिक रूप से ग्रामीण विकास का आधारभूत तत्व हैं। आर्थिक अवस्थापना तत्व ऐसे तत्व हैं, जो आर्थिक विकास प्रक्रिया को आसान बनाते हैं तथा अर्थतन्त्र को गतिशील करने में अपना योगदान देते हैं।

इस तरह स्पष्ट है कि अर्थतन्त्र को प्रेरित करने वाले सभी तत्व आर्थिक अवस्थापना के तत्व माने जा सकते हैं। अर्थतन्त्र में कृषि व पशुपालन, विभिन्न प्रकार के उद्योग तथा तृतीयक कार्य सम्मलित हैं। विशेषकर संस्थागत कारकों में वित्तीय संस्थायें भी अवस्थापना का कार्य करती हैं। इस तरह अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में कृषि ही अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इसलिए यहां कृषि सम्बन्धी अवस्थापना तत्वों की अधिकता है। अन्य आर्थिक अवस्थापना तत्व अर्थतन्त्र के अन्य पक्षों औद्योगिक एवं तृतीयक कार्यों को प्रोत्साहित करते हैं।[6]

आर्थिक दृष्टि से अवस्थापना तत्वों के महत्व और क्षेत्रीय प्रतिरूप के विश्लेषण हेतु निम्न प्रक्रिया अपनायी गयी हैं।

1. विभिन्न अवस्थापना तत्वों के निरपेक्ष मूल्यों को क्षेत्र की जनसंख्या या क्षेत्रफल से विभाजित करके उन्हें सापेक्षिक स्वरूप में लाया गया है। (तालिका सं0–1)
2. सामान्य विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय तालिका और मानचित्र का प्रयोग किया गया है।
3. पुनः क्षेत्रीयता को उभारने हेतु मानक लब्धांक[7] (Z score) का प्रयोग करके विकासखण्डवार जेड मूल्यों के आधार पर सारणीयन और मानचित्रण के द्वारा भौगोलिक विश्लेषण किया गया है।

तालिका– 1

प्रति दस हजार जनसंख्या पर अवस्थापनात्मक तत्व– 2014

क्र. सं.	विकास खण्ड	डाक/तार घर	संचार	परिवहन	बैंक	सहकारी समितियां	कृषि गोदाम	बीज गोदाम	कीटनाशक	उर्वरक केन्द्र
1	जखनिया	24	937	30	8	12	15	17	14	15
2	मनिहारी	27	388	39	8	14	16	17	15	16
3	सादात	23	809	40	7	7	11	11	9	11
4	सैदपुर	24	2354	46	8	6	13	11	11	10
5	देवकली	25	958	51	9	12	15	16	14	15
6	विरनो	14	405	26	5	10	19	15	18	15
7	मरदह	21	618	28	5	11	16	15	15	16
8	गाजीपुर	24	8481	37	5	13	16	15	14	18
9	करण्डा	18	739	32	5	11	13	14	12	13
10	कासिमाबाद	17	756	43	7	17	20	22	19	14
11	वाराचवर	24	812	27	6	13	17	17	16	17
12	मोहम्मदाबाद	18	2178	68	7	13	20	17	18	17
13	भावरकोल	28	780	47	8	11	10	10	9	13
14	जमानिया	32	1257	42	8	15	20	21	18	18
15	रेवतीपुर	21	556	20	7	9	12	12	11	12
16	भदौरा	23	2026	30	6	8	12	12	11	12

$$Z = \frac{X - \bar{X}}{\sigma}$$

यहां Z =मानक लब्धांक (Z मूल्य)
X = किसी भी तत्व का विकास खण्डवार निरपेक्ष मूल्य

$\bar{X}$ =सम्बन्धित तत्व का औसत

σ =सम्बन्धित तत्व का प्रमाणित विचलन

यहाँ Z scores में 0 औसत, 0 से धनात्मक और 0 से ऋणात्मक मूल्य क्रमशःअधिक या कम मात्रा को व्यक्त करते हैं।

आर्थिक अवस्थापना तत्व

आर्थिक अवस्थापना तत्व वे आधारभूत तत्व हैं, जो किसी भी क्षेत्र में अर्थतन्त्र को गतिशील करने में सहायक होते हैं। इन तत्वों में कृषि, उद्योग, तृतीयक क्रियाकलाप सम्मिलित हैं। कृषि अर्थतन्त्र के तत्वों में सिंचाई, विपणन, बीज, उर्वरक वितरण केन्द्र, कीटनाशक केन्द्र, बैंक, सहकारी कृषि ऋण समितियां, कृषि गोदाम आदि हैं तथा औद्योगिक अर्थतन्त्र में औद्योगिक आस्थान, औद्योगिक बैंक, औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र महत्वपूर्ण हैं। प्रमुख आर्थिक अवस्थापना तत्वों का औद्योगिक वर्णन निम्नवत है।

प्रमुख आर्थिक अवस्थापनात्मक तत्व

बैंक

अध्ययन क्षेत्र में प्रति दस हजार जनसंख्या पर बैंकों के वितरण प्रतिरूप के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक बैंक देवकली एवं भावरकोल विकासखण्ड में हैं। जबकि–न्यूनाधिक बैंक गाजीपुर विकासखण्ड में देखने को मिलता है। इसको स्पष्ट रूप से समझाने हेतु तालिका संख्या–2 एवं मानचित्र संख्या–1 A का प्रयोग किया गया है।

तालिका संख्या –2

बैंकों का वितरण प्रतिरूप 2014 (प्रति दस हजार जनसंख्या पर)

क्रमांक	संख्या	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	>– 0.60	उच्च	3	18.75
2.	0.45 – 0.60	मध्यम	9	56.25
3.	<– 0.45	निम्न	4	25.00
योग			16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर 2014

उपरोक्त तालिका संख्या–2 एवं मानचित्र संख्या–1A से स्पष्ट होता है कि उच्च श्रेणी के अर्न्तगत भावरकोल, रेवतीपुर क्षेत्र के पूर्वी भाग एवं देवकली क्षेत्र के पश्चिमी भाग में बैंको का वितरण अधिक है, इसके अन्तर्गत कुल तीन विकासखण्ड सम्मिलित हैं। जबकि मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत कुल नौ विकासखण्ड सम्मिलित हैं, जिसमें जखनियां, मनिहारी, सादात, और सैदपुर विकासखण्ड क्षेत्र के उत्तरी पश्चिमी भाग में तथा विरनों विकाखण्ड क्षेत्र के उत्तरी भाग में, करण्डा विकाखण्ड दक्षिणी भाग, बाराचवर, दक्षिण–पूर्व में मुहम्मदाबाद एवं जमानियां विकासखण्ड सम्मिलित है। इसी तरह निम्न श्रेणी के अन्तर्गत कुल चार विकास खण्ड सम्मिलित है। जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में भारदह, मध्यवर्ती भाग में गाजीपुर, उत्तरी पूर्वी भाग में कासमाबाद एवं पूर्वी दक्षिणी भाग में भदौरा विकास खण्ड सम्मिलित है।

उपर्युक्त वितरण से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में बैंकों का वितरण पूर्वी एवं दक्षिणी भाग में अधिक है, जबकि उत्तरी, मध्यवर्ती एवं द0 पूर्वी भाग में विरल है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

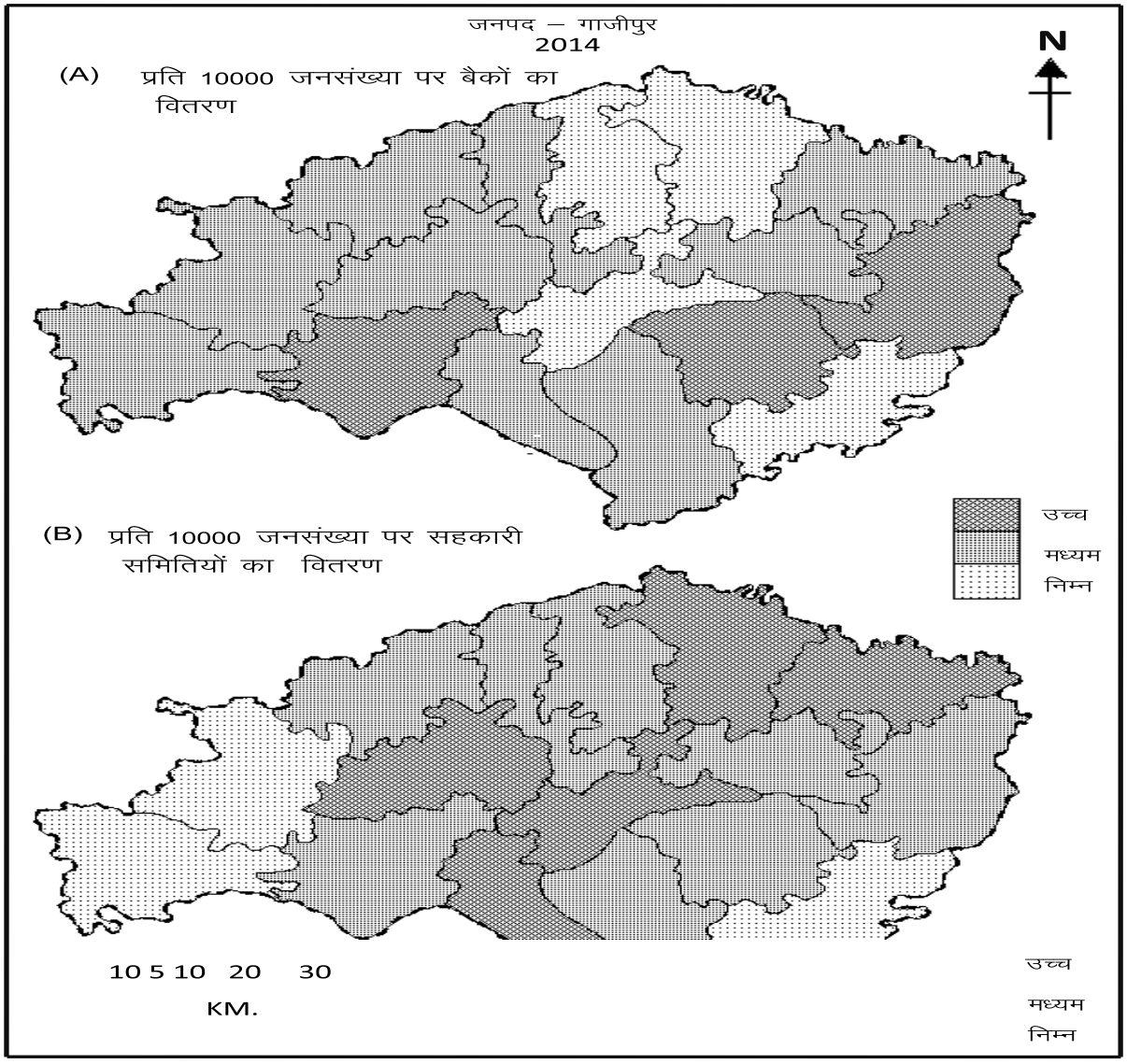

Fig. 1

सहकारी समितियाँ

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में सहकारी समितियों का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि सर्वाधिक सघन वितरण करण्डा एवं कासिमाबाद में देखने को मिलता है, जबकि विरल वितरण भदौरा एवं सादात विकास खण्ड में देखने को मिलता है। इसको और स्पष्ट करने के लिए तालिका संख्या–3 एवं मानचित्र संख्या–1B का प्रयोग किया गया है।

तालिका संख्या –3
जनपद में सहकारी समितियों का वितरण प्रतिरूप 2014
(प्रति दस हजार जनसंख्या पर)

क्रमांक	संख्या	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	>– 0.75	उच्च	5	31.25
2.	0.50 – 0.75	मध्यम	8	50.00
3.	<– 0.50	निम्न	3	18.75
योग	03		16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2010–11

उपर्युक्त तालिका संख्या–3 एवं मानचित्र संख्या–1B के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उच्च श्रेणी के अन्तर्गत कुल पाँच विकासखण्ड सम्मिलित हैं, जिसमें अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में मनिहारी, गाजीपुर एवं उत्तरी पूर्वी भाग में कासिमाबाद, बाराचवर तथा दक्षिणी भाग में करण्डा विकासखण्ड हैं। जबकि मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत सर्वाधिक आठ विकासखण्ड निहित हैं, जिसमें अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में जखनिया, विरनों, मरदह, दक्षिणी

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भाग में देवकली, जमानियां, मध्यवर्ती भाग में रेवतीपुर, मोहम्मदाबाद एवं पूर्वी भाग में भावरकोल विकासखण्ड हैं। इसी तरह निम्न श्रेणी के अन्तर्गत कुल तीन विकास खण्ड सम्मिलित है, जो क्रमशः अध्ययन क्षेत्र के पश्चिमी भाग में सादात, सैदपुर एवं पूर्वी भाग में भदौरा विकासखण्ड है।

उपर्युक्त वितरण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में सहकारी समितियों का वितरण प्रतिरूप मध्यवर्ती, दक्षिणी, उत्तरी, पूर्वी भाग में सर्वाधिक तथा पश्चिमी एवं पूर्वी भाग में न्यूनाधिक मात्रा में देखने को मिलता है।

कृषि गोदाम

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में कृषि गोदामों के वितरण को स्पष्ट करने से यह पता चलता है कि सबसे अधिक कृषि गोदाम का वितरण विरनो (1.41) विकास खण्ड में पाया जाता है। जबकि सबसे कम सादात (0.60) विकास खण्ड में देखने को मिलता है। इसको स्पष्ट करने के लिए तालिका संख्या–4 एवं मानचित्र संख्या–2A का प्रयोग किया गया है।

तालिका संख्या –4
जनपद में कृषि गोदामों का वितरण प्रतिरूप 2014
(प्रति दस हजार जनसंख्या पर)

क्रमांक	संख्या	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	>– 1.25	उच्च	1	6.25
2.	1.00 – 1.25	मध्यम उच्च	4	25.00
3.	0.75– 1.00	मध्यम	7	43.75
4.	<– 0.75	निम्न	4	25.00
योग	04		16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

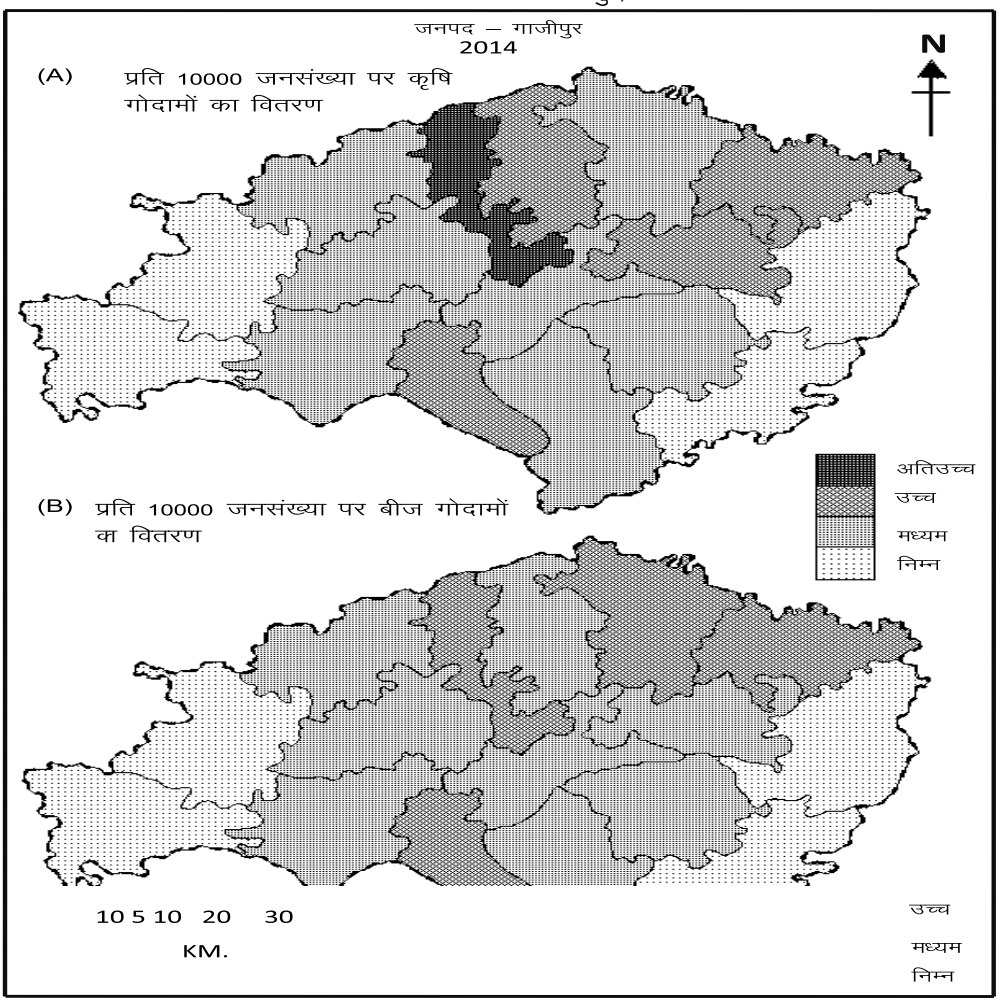

Fig. 2

उपर्युक्त तालिका संख्या–4 एवं मानचित्र संख्या–2 A को देखने से यह स्पष्ट होता है कि उच्च श्रेणी के अन्तर्गत केवल एक विकाखण्ड विरनों सम्मिलिति है तथा मध्यम उच्च श्रेणी के अन्तर्गत कुल चार विकास खण्ड सम्मिलित है। जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में मरदह, उत्तरी पूर्वी भाग में बाराचवर, मध्यवर्ती भाग में मुहम्दाबाद एवं दक्षिणी भाग में करण्डा विकासखण्ड है। इसी प्रकार क्षेत्र में मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत कुल सात विकासखण्ड हैं। अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में जखनियाँ, कासिमाबाद, मध्यवर्ती भाग में मनिहारी, गाजीपुर, दक्षिणी भाग में देवकली, रेवती व जमानियां सम्मिलित है। जबकि निम्न श्रेणी के अन्तर्गत शेष चार विकासखण्ड जो अध्ययन क्षेत्र के पश्चिमी भाग में सैदपुर एवं सादात तथा पूर्वी भाग में भावरकोल एवं भदौरा विकासखण्ड सम्मिलित है।

उपर्युक्त वितरण के अवलोकन से यह पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में कृषि गोदामों का वितरण सर्वाधिक उत्तरी मध्यवर्ती एवं दक्षिणी भाग में पाया जाता है। जबकि न्यूनाधिक वितरण क्षेत्र के पश्चिमी एवं पूर्वी भाग में देखने को मिलता है।

बीज गोदाम

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में बीज गोदामों के वितरण को स्पष्ट किया गया है इसको स्पष्ट करने से यह ज्ञात हुआ है कि क्षेत्र में सबसे अधिक वितरण करण्डा (1.14) एवं विरनो (1.11) विकासखण्ड में पाया जाता है। जबकि सबसे कम सैदपुर (0.53) विकासखण्ड में पाया जाता है। इसको और स्पष्ट करने के लिए तालिका संख्या–5 एवं मानचित्र संख्या–2B का अध्ययन किया गया है।

तालिका संख्या –5
गाजीपुर जनपद में बीज गोदाम का वितरण प्रतिरूप 2014
(प्रति दस हजार जनसंख्या पर)

क्रमांक	संख्या	श्रेणी	विकासखण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	>– 1.00	उच्च	4	25.00
2.	0.75 – 1.00	मध्यम	8	50.00
3.	<– 0.75	निम्न	4	25.00
योग			16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

उपर्युक्त तालिका–5 एवं मानचित्र संख्या–2 B के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उच्च श्रेणी के अन्तर्गत कुल चार विकासखण्ड क्षेत्र के उत्तरी भाग में विरनो, कासमाबाद पूर्वी भाग में बाराचवर एवं दक्षिणी भाग में करण्डा सम्मिलित हैं। तथा मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत कुल आठ विकासखण्ड सम्मिलित हैं। इसके अन्तर्गत क्षेत्र के उत्तरी भाग में जखनियां, मरदह, दक्षिणी भाग में देवकली, जमानियां, मध्यवर्ती भाग में मनिहारी, गाजीपुर, रेवतीपुर एवं मुहम्मदाबाद आते हैं। जबकि निम्न श्रेणी के अन्तर्गत शेष चार विकाखण्ड क्षेत्र के पश्चिमी भाग में–सादात, सैदपुर एवं पूर्वी भाग में भावरकोल व भदौरा आते हैं। उपर्युक्त तालिका एवं मानचित्र से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में बीज गोदामों के वितरण का सर्वाधिक उत्तरी भाग में है, जबकि पूर्वी भाग में न्यूनाधिक वितरण देखने को मिलता है।

कीट नाशक केन्द्र

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में कीटनाशक केन्द्रों के वितरण को स्पष्ट किया गया है, इससे यह ज्ञात हुआ है कि अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक वितरण विरनो (1.34) एवं वाराचवर (0.98) विकास खण्ड में पाया जाता है। जबकि सबसे कम वितरण सादात (0.49) विकासखण्ड में पाया जाता है। इसको स्पष्ट करने के लिए तालिका संख्या–6 एवं मानचित्र संख्या–3A का अध्ययन किया गया है।

तालिका संख्या –6
कीटनाशक केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप 2014
(प्रति दस हजार जनसंख्या पर)

क्रमांक	संख्या	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	>– 1.25	उच्च	1	6.25
2.	0.75 – 1.25	मध्यम	8	50.00
3.	<– 0.75	निम्न	7	43.75
योग	03		16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

उपर्युक्त तालिका–6 एवं मानचित्र संख्या–3। के अवलोकन से स्पष्ट होता हे कि उच्च श्रेणी के अन्तर्गत केवल एक विकासखण्ड विरनो सम्मिलित है, जो अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में स्थित है, तथा मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत कुल आठ विकासखण्ड सम्मिलित हैं, जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में मरदह एवं कासिमाबाद, उत्तरी–पूर्वी भाग में बाराचवर एवं मुहम्मदाबाद विकासखण्ड, मध्यवर्ती भाग में मनिहारी व गाजीपुर तथा दक्षिणी भाग में करण्डा व जमानियां विकासखण्ड सम्मिलित हैं। जबकि निम्न श्रेणी के अन्तर्गत कुल सात विकासखण्ड आते है, जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में जखनियाँ विकास खण्ड,

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

दक्षिणी–पश्चिमी भाग में सादात एवं सैदपुर, दक्षिणी भाग में देवकली तथा दक्षिणी–पूर्वी भाग में रेवतीपुर, भदौरा व भावरकोल सम्मिलित है।

उपर्युक्त वितरण के अवलोकन से यह पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में कीटनाशक केन्द्रों का सर्वाधिक वितरण उत्तरी एवं मध्यवर्ती भागों में है, जबकि न्यूनाधिक वितरण दक्षिणी पश्चिमी व पूर्वी भाग में पाया जाता है।

उर्वरक केन्द्र

अध्ययन क्षेत्र में गाजीपुर जनपद में उर्वरक केन्द्रों के वितरण को स्पष्ट किया गया है, इससे यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में उच्च श्रेणी के विकास खण्ड उत्तरी भाग में एवं सबसे कम वितरण सैदपुर (0.48) विकास खण्ड में पाया जाता है। इसको स्पष्ट करने के लिए तालिका संख्या –7 एवं मानचित्र संख्या – 3B का अध्ययन किया गया है।

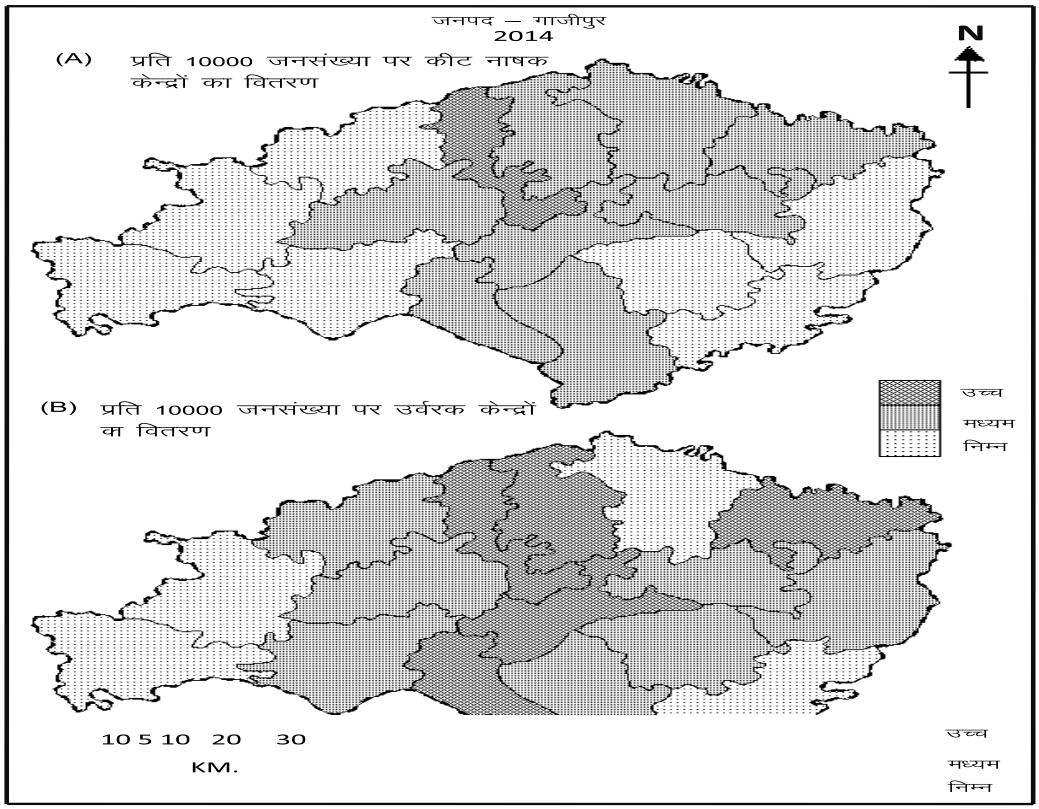

Fig. 3

तालिका संख्या –7
उर्वरक केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप 2014
(प्रति दस हजार जनसंख्या पर)

क्रमांक	संख्या	श्रेणी	विकास खण्ड	
			संख्या	प्रतिशत
1.	>– 1.00	उच्च	5	31.25
2.	0.75 – 1.00	मध्यम	7	43.75
3.	<– 0.75	निम्न	4	25.00
योग			16	100.00

स्रोत :– जिला सांख्यिकी पत्रिका गाजीपुर, 2014

उपर्युक्त तालिका–7 एवं मानचित्र संख्या–3B के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च श्रेणी के उर्वरक वितरण केन्द्रों के अन्तर्गत 5 विकासखण्ड सम्मिलित हैं। जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में विरनों एवं मरदह विकासखण्ड, उत्तरी–पूर्वी भाग में बाराचवर, मध्यवर्ती भाग में गाजीपुर तथा दक्षिणी भाग में करण्डा विकासखण्ड सम्मिलित हैं। मध्यम श्रेणी के उर्वरक वितरण केन्द्रों के अन्तर्गत 7 विकास खण्ड सम्मिलित है। जिसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में जखनियाँ, मध्यवर्ती भाग में मनिहारी, मुम्मदाबाद व रेवतीपुर, दक्षिणी भाग में देवकली व जमानियां तथा पूर्वी भाग में भावरकोल विकास खण्ड सम्मिलित हैं। जबकि निम्न श्रेणी में उर्वरक वितरण केन्द्रों के अन्तर्गत 4 विकास खण्ड सम्मिलित हैं। जिसमें अध्ययन क्षेत्र के पश्चिमी भाग में सैदपुर व सादात, पूर्वी भाग में भदौरा और उत्तरी भाग में कासिमाबाद विकास खण्ड सम्मिलित हैं।

उपर्युक्त वितरण के अवलोकन से यह पता चला है कि अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में उर्वरक केन्द्रों का सर्वाधिक वितरण उत्तरी भाग में पाया जाता है, जबकि न्यूनाधिक वितरण क्षेत्र के पश्चिमी भागों में पाया जाता है।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट है कि अवस्थापनात्मक विकास विभिन्न प्रकार के विकासात्मक कार्यों को प्रोत्साहित करता है। इसीलिए क्षेत्र में अवस्थापनात्मक विकास जहां–जहां अधिक हुआ है, वहीं ग्रामीण विकास भी अधिक हुआ है। ग्रामीण अर्थतन्त्र के आधार अवस्थापना तत्व हैं इसलिए कृषि विकास के अवस्थापना तत्वों का क्षेत्रीय वितरण और कृषिगत विविधता में क्षेत्रीय सहसम्बन्ध मिलता है। यह मध्यवर्ती और उत्तरी भाग में विभिन्न अवस्थापना तत्वों का सघन वितरण और प्रगतिशील कृषि, सब्जी, व्यापारिक कृषि आदि के विकास से समान रूप में विकसित हुआ है। कृषि विकास के विभिन्न अवस्थापना तत्व एवं सामाजिक विकास के अन्य अवस्थापना तत्व क्षेत्रीय रूप में समान पाये जाते हैं क्योंकि सभी अवस्थापना तत्व मानव निर्मित हैं इसलिए विभिन्न केन्द्रों पर उनका केन्द्रीयकरण दूसरे अवस्थापना तत्वों को आकर्षित करता है।

अंत टिप्पणी

1. *श्रीवास्तव, शर्मा एवं चौहान : प्रादेशिक नियोजन एवं सन्तुलित विकास, वसुन्धरा (2005) प्रकाशन, गोरखपुर*
2. *वर्मा, शिवशंकर एवं शाही, सुनील कुमार (1987) : अवस्थापनात्मक तत्व एवं प्रादेशिक विकास एक सैद्धान्तिक अध्ययन फरेन्द्रा तहसील का प्रतीक अध्ययन, भू–विज्ञान, नेशनल ज्योग्राफिकल सोसायटी ऑफ इण्डिया, वाराणसी, अंक–2, संख्या–1, पृ0 सं0–25–34*
3. *Desia, B. (1988) : Rural Development : Issue and Problems Vol-1, Himalaya Publication House Bombay.*
4. *Jelsinki, W. (---) : A Prologue to Population Geography.*
5. *Tomar, R.B.S. (1979): Rural Sociology: Shri Ram Mishra & Co. Press Agra-3.*
6. *यादव, अजीत कुमार (2008): सेवा केन्द्र एवं समन्वित ग्रामीण विकास जनपद गाजीपुर का एक प्रतीक अध्ययन, प्रस्तुत शोध प्रबन्ध दीनदयाल गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर*
7. *Smith, D.M. (----) : Pattern in Human Geography Penguin books London.*